



प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापार एवं क्षेत्रीय एकीकरण

डॉ. रंजीत कुमार ठाकुर

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.4.12364>

सारांश

प्राचीन भारत के राजनीतिक एवं आर्थिक इतिहास में अंग और मगध जनपदों का विशेष महत्त्व था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास गंगा के मध्य एवं निचले मैदानों में अनेक महाजनपदों का उदय हुआ, जिनमें अंग और मगध प्रमुख थे। इन जनपदों का विकास केवल राजनीतिक शक्ति के विस्तार तक सीमित नहीं था, बल्कि कृषि, व्यापार, नगरीकरण, संसाधनों पर नियंत्रण तथा क्षेत्रीय संपर्कों की व्यापक प्रक्रिया से भी जुड़ा हुआ था। अंग जनपद का प्रमुख नगर चंपा था, जिसे प्राचीन साहित्य में एक महत्वपूर्ण नगरीय एवं व्यापारिक केंद्र के रूप में उल्लेखित किया गया है। दूसरी ओर, मगध ने अपनी भौगोलिक स्थिति, कृषि संसाधनों, राजनीतिक संगठन तथा सैन्य शक्ति के आधार पर क्रमशः एक प्रभावशाली राज्य का स्वरूप ग्रहण किया। अंग और मगध के संबंधों को समझने के लिए उनके बीच उत्पन्न राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तथा उसके परिणामस्वरूप हुए क्षेत्रीय परिवर्तनों का अध्ययन आवश्यक है। बौद्ध साहित्य, विशेषकर अंगुत्तर निकाय तथा महावग्ग, और अन्य प्राचीन साहित्यिक परंपराएँ इन जनपदों की राजनीतिक स्थिति एवं पारस्परिक संबंधों के पुनर्निर्माण में उपयोगी हैं। परंपरागत विवरणों के अनुसार, मगध के राजा बिंबिसार ने अंग पर विजय प्राप्त की और उसे मगध की राजनीतिक शक्ति के अधीन कर लिया। इस विजय ने दोनों जनपदों के राजनीतिक संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। हालाँकि, इस प्रक्रिया को केवल सैन्य विजय के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा; इसके साथ क्षेत्रीय सत्ता के विस्तार, व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण और आर्थिक संसाधनों तक पहुँच जैसे पहलुओं का भी विश्लेषण आवश्यक है। आर्थिक दृष्टि से अंग और मगध का क्षेत्र गंगा तथा उसकी सहायक नदियों से जुड़ी नदी-प्रणालियों के निकट स्थित था। नदियाँ कृषि, परिवहन और वस्तुओं के आदान-प्रदान के लिए महत्वपूर्ण थीं। चंपा की व्यापारिक प्रतिष्ठा तथा मगध के बढ़ते राजनीतिक प्रभाव को ध्यान में रखते हुए यह विचार किया जा सकता है कि अंग पर मगध के नियंत्रण ने पूर्वी गंगा घाटी में राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया होगा। फिर भी, राजनीतिक अधीनता को व्यापारिक गतिविधियों के तत्काल विस्तार या पूर्ण आर्थिक एकीकरण के समान नहीं माना जा सकता। इन संभावनाओं की पुष्टि के लिए साहित्यिक उल्लेखों के साथ पुरातात्विक साक्ष्यों, मुद्राओं तथा क्षेत्रीय भौगोलिक परिस्थितियों का आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक गतिविधियों और क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। इसमें दोनों जनपदों की राजनीतिक संरचना, चंपा की व्यापारिक भूमिका, मगध के विस्तार तथा अंग के राजनीतिक अधिग्रहण के संभावित आर्थिक परिणामों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही, यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि राजनीतिक शक्ति के केंद्रीकरण ने पूर्वी भारत के क्षेत्रीय संबंधों और आर्थिक संपर्कों को किस सीमा तक प्रभावित किया। इस प्रकार, यह अध्ययन प्राचीन भारत में राज्य निर्माण, व्यापारिक नेटवर्क और क्षेत्रीय एकीकरण के पारस्परिक संबंधों को समझने में योगदान दे सकता है।¹

मुल शब्द: अंग जनपद, मगध, चंपा, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक नेटवर्क, क्षेत्रीय एकीकरण, महाजनपद, राज्य निर्माण

प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापार एवं क्षेत्रीय एकीकरण प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण विषय है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर भारत में अनेक महाजनपदों का उदय हुआ, जिनके बीच राजनीतिक प्रभुत्व, क्षेत्रीय विस्तार, आर्थिक संसाधनों तथा व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रतिस्पर्धा चल रही थी। इस काल में अंग और मगध पूर्वी भारत के दो प्रमुख महाजनपद थे, जिन्होंने गंगा घाटी की राजनीतिक एवं आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित किया। अंग महाजनपद की राजधानी चम्पा थी, जिसकी पहचान वर्तमान भागलपुर क्षेत्र के निकट स्थित प्राचीन नगरी के रूप में की जाती है। चम्पा अपनी भौगोलिक स्थिति तथा गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों से जुड़े जलमार्गों के कारण व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी। प्राचीन बौद्ध साहित्य में चम्पा का उल्लेख एक समृद्ध नगरी के रूप में मिलता है, जिससे अंग की आर्थिक गतिविधियों और व्यापारिक महत्त्व का संकेत मिलता है।² दूसरी ओर, मगध का केंद्र प्रारंभ में गिरिव्रज अथवा राजगृह था, जो प्राकृतिक सुरक्षा, कृषि योग्य भूमि और क्षेत्रीय संपर्कों की दृष्टि से अनुकूल स्थिति में था। मगध की शक्ति के विकास में उपजाऊ भूमि, लौह संसाधनों तक पहुँच, हाथियों की उपलब्धता, नदी-मार्गों तथा संगठित सैन्य शक्ति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन परिस्थितियों ने मगध को अपने पड़ोसी राज्यों के साथ प्रतिस्पर्धा करने और धीरे-धीरे अपना राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने का अवसर प्रदान किया। अंग और मगध के संबंधों को केवल दो राज्यों के बीच होने वाले सैन्य संघर्ष के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा, क्योंकि इनके पीछे आर्थिक हितों, व्यापारिक संपर्कों और क्षेत्रीय प्रभुत्व की व्यापक आकांक्षाओं की भी भूमिका थी।³ व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण से वस्तुओं के आवागमन, राजस्व प्राप्ति और दूरस्थ क्षेत्रों के साथ संपर्क को बढ़ावा मिल सकता था। इस संदर्भ में चम्पा की स्थिति विशेष महत्त्व रखती थी, क्योंकि नदी-मार्गों के माध्यम से यह पूर्वी भारत के अन्य क्षेत्रों से जुड़ने की क्षमता रखती थी। मगध के शासक बिंबिसार द्वारा अंग पर विजय का उल्लेख बौद्ध साहित्य में मिलता है। इस विजय ने मगध की राजनीतिक शक्ति का विस्तार किया तथा अंग के क्षेत्र और उसके आर्थिक संसाधनों पर मगध का प्रभाव स्थापित करने में सहायता की। तथापि, इस घटना को केवल व्यापारिक कारणों से प्रेरित मानना उचित नहीं होगा; इसके पीछे राजनीतिक प्रभुत्व, सामरिक हित और राज्य-विस्तार की आकांक्षाएँ भी महत्वपूर्ण थीं।⁴ अंग के मगध में समावेश ने पूर्वी भारत की राजनीतिक संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया और मगध के क्रमिक उत्कर्ष के लिए आधार तैयार किया। आगे चलकर मगध

शिशुनाग, नंद और मौर्य शासकों के समय एक व्यापक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा, यद्यपि इस विकास को केवल अंग की विजय का परिणाम नहीं माना जा सकता। इस प्रकार, अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक गतिविधियों और क्षेत्रीय एकीकरण का अध्ययन प्राचीन पूर्वी भारत में राज्य-निर्माण, आर्थिक विकास, नदी-आधारित संपर्कों तथा राजनीतिक केंद्रीकरण की प्रक्रिया को समझने में सहायक है। यह विषय विशेष रूप से अंग क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्त्व को रेखांकित करता है और स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारत में क्षेत्रीय शक्तियों के बीच संघर्ष एवं संपर्क ने व्यापक राजनीतिक परिवर्तनों के लिए किस प्रकार परिस्थितियाँ निर्मित कीं।⁵

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक गतिविधियों तथा क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत दोनों महाजनपदों की राजनीतिक स्थिति, शासन-व्यवस्था, क्षेत्रीय विस्तार और परस्पर संबंधों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही, चम्पा जैसे प्रमुख नगरीय एवं व्यापारिक केंद्रों की भूमिका, नदी-मार्गों के माध्यम से विकसित व्यापारिक संपर्कों तथा आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण के महत्त्व को समझने का प्रयास किया जाएगा। शोध में यह भी विश्लेषित किया जाएगा कि अंग पर मगध की विजय ने पूर्वी भारत की राजनीतिक संरचना और क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित किया।⁶ इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति अपनाई जाएगी तथा बौद्ध साहित्यिक स्रोतों, विशेषकर अंगुत्तर निकाय, दीघ निकाय और विनय पिटक में उपलब्ध प्रासंगिक विवरणों का आलोचनात्मक परीक्षण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, जैन साहित्य तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों से प्राप्त संबंधित सूचनाओं का उपयोग राजनीतिक एवं सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को समझने के लिए किया जाएगा।⁷ पुरातात्विक साक्ष्यों, उत्खनन से प्राप्त अवशेषों, प्राचीन मुद्राओं तथा संबंधित स्थलों की ऐतिहासिक पहचान के आधार पर साहित्यिक विवरणों की यथासंभव पुष्टि की जाएगी। गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों की भौगोलिक स्थिति, नदी-मार्गों तथा प्राचीन बस्तियों के स्थानिक संबंधों का अध्ययन भी शोध का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होगा। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण करके राजनीतिक संघर्ष, व्यापारिक संपर्क और क्षेत्रीय एकीकरण के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।⁸

प्राचीन भारत के इतिहास में अंग एवं मगध का विशेष महत्त्व था, क्योंकि इन दोनों जनपदों ने पूर्वी भारत की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचना के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर भारत में महाजनपदों का उदय तत्कालीन राजनीतिक परिवर्तन, कृषि के विस्तार, नगरीकरण, व्यापारिक गतिविधियों और क्षेत्रीय शक्तियों के विकास से जुड़ा हुआ था। बौद्ध साहित्य में सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, जिनमें अंग और मगध भी सम्मिलित थे। इस काल में अनेक जनपद अपने क्षेत्रीय प्रभाव का विस्तार करने, संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित करने तथा व्यापारिक संपर्कों को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयासरत थे। अंग महाजनपद की राजधानी चम्पा थी, जिसे सामान्यतः वर्तमान बिहार के भागलपुर क्षेत्र के निकट स्थित प्राचीन नगरी से संबंधित माना जाता है।⁹ चम्पा की भौगोलिक स्थिति गंगा नदी-प्रणाली से संपर्क और पूर्वी भारत के विभिन्न क्षेत्रों के साथ व्यापारिक संबंधों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थी। नदी-मार्गों के माध्यम से वस्तुओं, यात्रियों और व्यापारियों का आवागमन संभव था, जिससे इस क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला। अंग की राजनीतिक पहचान एक स्वतंत्र महाजनपद के रूप में विकसित हुई थी और इसकी क्षेत्रीय स्थिति ने इसे पड़ोसी राज्यों के साथ राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में महत्त्वपूर्ण

स्थान प्रदान किया। दूसरी ओर, मगध महाजनपद का प्रारंभिक राजनीतिक केंद्र गिरिव्रज अथवा राजगृह था, जो वर्तमान राजगीर क्षेत्र से संबंधित है। पहाड़ियों से घिरे होने के कारण राजगृह को प्राकृतिक सुरक्षा प्राप्त थी।¹⁰ मगध की भौगोलिक स्थिति, कृषि योग्य भूमि, नदी-प्रणाली से संपर्क तथा लौह संसाधनों तक पहुँच ने उसके राजनीतिक और आर्थिक विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान कीं। इसके अतिरिक्त, हाथियों की उपलब्धता और सैन्य संगठन ने भी मगध की शक्ति बढ़ाने में योगदान दिया। मगध के प्रारंभिक उत्कर्ष में हर्यक वंश के शासकों की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय थी। बिम्बिसार ने विवाह-संबंधों, कूटनीति और सैन्य विस्तार के माध्यम से मगध की स्थिति को मजबूत किया। बौद्ध साहित्य में अंग पर बिम्बिसार की विजय का उल्लेख मिलता है, जो दोनों महाजनपदों के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग है।¹¹ इस विजय के परिणामस्वरूप अंग की स्वतंत्र राजनीतिक स्थिति समाप्त हुई और उसका क्षेत्र मगध के प्रभावधीन आ गया। दोनों जनपदों की शासन-व्यवस्था के संबंध में उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्य यह संकेत देते हैं कि राजतंत्रात्मक शासन का महत्त्व बढ़ रहा था, जिसमें राजा सैन्य शक्ति, प्रशासन और राजस्व-संग्रह के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करता था। हालांकि, शासन की संस्थागत संरचना, अधिकारियों की भूमिका और प्रशासनिक प्रक्रियाओं के संबंध में अंग तथा मगध के लिए समान स्तर के प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं; इसलिए इनके प्रशासन का पुनर्निर्माण सावधानीपूर्वक करना आवश्यक है। इस काल में कृषि उत्पादन से प्राप्त संसाधन, व्यापारिक गतिविधियाँ और क्षेत्रीय नियंत्रण राजसत्ता को मजबूत बनाने के प्रमुख आधार थे।¹² अंग और मगध के बीच प्रतिस्पर्धा को इसी व्यापक संदर्भ में समझा जा सकता है, जिसमें राजनीतिक प्रभुत्व के साथ-साथ आर्थिक संसाधनों, व्यापारिक संपर्कों और सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर नियंत्रण की आकांक्षा भी शामिल थी। अंग पर मगध की विजय ने पूर्वी भारत में शक्ति-संतुलन को बदल दिया और मगध के क्रमिक विस्तार के लिए आधार तैयार किया। आगे चलकर मगध शिशुनाग, नंद और मौर्य शासकों के अधीन एक व्यापक राजनीतिक शक्ति के रूप में विकसित हुआ। इस प्रकार, महाजनपदों के उदय, अंग एवं मगध की भौगोलिक परिस्थितियों, उनकी राजनीतिक संरचना और शासन-व्यवस्था का अध्ययन प्राचीन पूर्वी भारत में राज्य-निर्माण तथा क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया को समझने के लिए आवश्यक है।¹³

प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा छठी शताब्दी ईसा पूर्व में पूर्वी भारत की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष थी। दोनों महाजनपदों के बीच प्रतिस्पर्धा के पीछे क्षेत्रीय प्रभुत्व, आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण, व्यापारिक संपर्कों तथा सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को अपने अधीन करने की आकांक्षा जैसे अनेक कारण रहे होंगे। अंग महाजनपद की राजधानी चम्पा एक महत्त्वपूर्ण नगरीय एवं व्यापारिक केंद्र थी, जिसकी भौगोलिक स्थिति गंगा नदी-प्रणाली के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों से संपर्क स्थापित करने में सहायक थी।¹⁴ दूसरी ओर, मगध की भौगोलिक स्थिति, कृषि संसाधन, लौह संसाधनों तक पहुँच और सैन्य क्षमता उसके राजनीतिक विस्तार के लिए अनुकूल आधार प्रदान करते थे। बौद्ध साहित्य, विशेषकर दीघ निकाय और अंगुत्तर निकाय, से तत्कालीन महाजनपदों की राजनीतिक स्थिति तथा उनके पारस्परिक संबंधों के अध्ययन में सहायता मिलती है। अंग और मगध के शासकों के बीच संबंधों के विशिष्ट विवरण सीमित होने के बावजूद, उपलब्ध परंपराओं से दोनों क्षेत्रों के बीच राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का संकेत मिलता है। मगध के हर्यक वंशीय शासक बिम्बिसार ने कूटनीति, वैवाहिक संबंधों और सैन्य विस्तार के माध्यम से अपने राज्य की शक्ति बढ़ाई। बौद्ध परंपरा के अनुसार, बिम्बिसार ने अंग के शासक

ब्रह्मदत्त को पराजित कर अंग को मगध के अधीन कर लिया था।¹⁵ इस विजय का राजनीतिक महत्त्व इसलिए था कि इससे मगध का प्रभाव पूर्व की ओर विस्तृत हुआ और चम्पा जैसे महत्त्वपूर्ण नगरीय केंद्र पर उसका अधिकार स्थापित हुआ। अंग के अधिग्रहण से मगध को नए क्षेत्रीय संसाधनों, व्यापारिक संपर्कों और पूर्वी भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने के अवसर प्राप्त हुए होंगे, हालांकि इन परिणामों की सीमा और स्वरूप के संबंध में प्रत्यक्ष प्रमाण सीमित हैं।¹⁶ इस राजनीतिक परिवर्तन ने दोनों महाजनपदों के बीच शक्ति-संतुलन को बदल दिया तथा मगध के आगे के विस्तार के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल बनाईं। इसके बावजूद, अंग की विजय को मगध के उत्कर्ष का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि मगध की शक्ति के विकास में कृषि उत्पादन, प्रशासनिक संगठन, सैन्य क्षमता, कूटनीति और बाद के शासकों की नीतियों का भी योगदान था। इस प्रकार, अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारत में राज्य-विस्तार की प्रक्रिया राजनीतिक संघर्ष, आर्थिक हितों और क्षेत्रीय संपर्कों से गहराई से जुड़ी हुई थी।¹⁷

प्राचीन अंग जनपद की राजधानी चंपा पूर्वी भारत के प्रमुख नगरीय एवं व्यापारिक केंद्रों में से एक थी। इसका ऐतिहासिक महत्त्व न केवल अंग की राजनीतिक राजधानी के रूप में था, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों, व्यापारिक संपर्कों और नगरीय विकास के केंद्र के रूप में भी था। बौद्ध साहित्य, विशेषकर दीघ निकाय के महापरिनिब्बान सुत्त तथा अंगुत्तर निकाय में चंपा का उल्लेख मिलता है, जिससे तत्कालीन जनपदीय व्यवस्था में इस नगर के महत्त्व का पता चलता है। चंपा की पहचान सामान्यतः वर्तमान बिहार के भागलपुर क्षेत्र के निकट स्थित प्राचीन नगरी से की जाती है।¹⁸ इसकी भौगोलिक स्थिति गंगा नदी-प्रणाली से संपर्क के कारण व्यापारिक गतिविधियों के विकास के लिए अनुकूल थी। प्राचीन काल में नदियाँ परिवहन, वस्तुओं के आवागमन और विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण माध्यम थीं। चंपा की स्थिति ने इसे अंग जनपद के आंतरिक क्षेत्रों तथा गंगा घाटी के अन्य भागों से जोड़ने में सहायता की होगी। व्यापारिक केंद्र के रूप में चंपा की भूमिका को तत्कालीन नगरीकरण, वस्तुओं के विनिमय और आर्थिक संपर्कों के व्यापक संदर्भ में समझा जा सकता है।¹⁹ कृषि उत्पादन से प्राप्त वस्तुओं, दैनिक उपयोग की सामग्री, हस्तशिल्प उत्पादों और अन्य व्यापारिक वस्तुओं का विनिमय ऐसे नगरों की आर्थिक गतिविधियों का हिस्सा रहा होगा, यद्यपि चंपा में व्यापार की विशिष्ट वस्तुओं और उनकी मात्रा के संबंध में प्रत्यक्ष प्रमाण सीमित हैं। बौद्ध साहित्य में चंपा का उल्लेख व्यापारियों, गृहस्थों तथा नगरीय जीवन से जुड़े संदर्भों में मिलता है, जो इसकी सामाजिक एवं आर्थिक सक्रियता को समझने में उपयोगी है। चंपा के व्यापारिक संबंधों का अध्ययन करते समय नदी-मार्गों, स्थल-मार्गों और पड़ोसी जनपदों के साथ संपर्कों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।²⁰ अंग और मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में चंपा का महत्त्व और बढ़ जाता है, क्योंकि इस नगर पर नियंत्रण स्थापित करना अंग की राजनीतिक शक्ति तथा उसके आर्थिक संपर्कों को प्रभावित कर सकता था। बिम्बिसार द्वारा अंग पर विजय के बाद चंपा मगध के राजनीतिक प्रभाव के अंतर्गत आ गया, जिससे मगध की पूर्वी दिशा में स्थिति मजबूत हुई और उसे नए व्यापारिक संपर्कों तक पहुँच प्राप्त करने का अवसर मिला। तथापि, चंपा के व्यापारिक विकास को केवल राजनीतिक अधिग्रहण का परिणाम मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि इसकी भौगोलिक स्थिति, नदी-आधारित परिवहन और क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियाँ भी इसके महत्त्व के प्रमुख आधार थीं। इस प्रकार, चंपा का ऐतिहासिक अध्ययन प्राचीन अंग की नगरीय संस्कृति, व्यापारिक गतिविधियों, नदी-आधारित संपर्कों तथा

राजनीतिक शक्ति और आर्थिक हितों के पारस्परिक संबंधों को समझने में सहायक है।²¹

प्राचीन अंग एवं मगध की आर्थिक संरचना मुख्यतः कृषि, शिल्प उत्पादन, नगरीकरण, व्यापारिक गतिविधियों तथा नदी एवं स्थल-मार्गों से विकसित संपर्कों पर आधारित थी। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास पूर्वी भारत में कृषि के विस्तार और स्थायी बस्तियों के विकास ने जनपदीय अर्थव्यवस्थाओं को सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। गंगा घाटी की उपजाऊ भूमि तथा जल की उपलब्धता ने कृषि उत्पादन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान कीं। कृषि से प्राप्त उपज स्थानीय उपभोग के अतिरिक्त विनिमय, कर-संग्रह और नगरीय आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार भी बन सकती थी।²² इस प्रकार कृषि-अधिशेष ने शिल्पकारों, व्यापारियों, प्रशासनिक समूहों और अन्य गैर-कृषक वर्गों के विकास में योगदान दिया होगा, यद्यपि अंग और मगध में कृषि-अधिशेष की वास्तविक मात्रा के प्रत्यक्ष प्रमाण सीमित हैं। दोनों जनपदों में आर्थिक गतिविधियों के विस्तार के साथ शिल्प उत्पादन और नगरीय जीवन का महत्त्व बढ़ा। धातु-कर्म, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण, वस्त्र उत्पादन तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं से संबंधित शिल्प तत्कालीन अर्थव्यवस्था के संभावित महत्त्वपूर्ण अंग थे। हालांकि, इन गतिविधियों के स्वरूप और उनके उत्पादन-स्तर को निर्धारित करने के लिए साहित्यिक विवरणों के साथ पुरातात्विक साक्ष्यों का आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक है। व्यापारिक गतिविधियों में कृषि उत्पादों, शिल्प-वस्तुओं, धातु से निर्मित सामग्री तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं का विनिमय महत्त्वपूर्ण रहा होगा। इस काल में वस्तु-विनिमय के साथ-साथ धातु की मुद्राओं का प्रचलन भी विकसित हो रहा था, जिससे व्यापारिक लेन-देन को सुविधा मिली; फिर भी अंग और मगध के प्रत्येक क्षेत्र में मुद्रा के उपयोग की व्यापकता समान थी, ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।²³ आर्थिक संपर्कों के विकास में गंगा तथा उसकी सहायक नदियों का विशेष महत्त्व था। नदी-मार्ग अपेक्षाकृत भारी वस्तुओं के परिवहन और दूरस्थ क्षेत्रों के साथ संपर्क स्थापित करने में उपयोगी थे, जबकि स्थल-मार्ग गाँवों, नगरों, बाजारों और पड़ोसी जनपदों को जोड़ते थे। अंग की राजधानी चंपा की नदी-आधारित भौगोलिक स्थिति ने उसे व्यापारिक संपर्कों के विकास के लिए अनुकूल अवसर प्रदान किए, जबकि मगध की स्थिति ने उसे गंगा घाटी के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ने तथा अपने आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव का विस्तार करने में सहायता की।²⁴ दोनों जनपदों की आर्थिक संरचना को केवल स्थानीय उत्पादन तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि कृषि, शिल्प, व्यापार और परिवहन परस्पर संबंधित थे। व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण से वस्तुओं की आवाजाही, राजस्व-संग्रह और राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने के अवसर मिल सकते थे। इसी संदर्भ में अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का आर्थिक पक्ष भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अंग पर मगध के अधिकार ने मगध के क्षेत्रीय विस्तार में योगदान दिया और उसे पूर्वी भारत के महत्त्वपूर्ण आर्थिक संपर्कों तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार, कृषि-अधिशेष, शिल्प उत्पादन, नगरीकरण, विनिमय व्यवस्था और नदी एवं स्थल-मार्गों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन प्राचीन अंग एवं मगध की आर्थिक संरचना तथा पूर्वी भारत में क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया को समझने के लिए आवश्यक है।²⁵

प्राचीन अंग एवं मगध के बीच व्यापारिक संबंधों का अध्ययन पूर्वी भारत की आर्थिक गतिविधियों, क्षेत्रीय संपर्कों और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के पारस्परिक संबंधों को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास गंगा घाटी में कृषि उत्पादन के विस्तार, नगरों के विकास तथा विभिन्न महाजनपदों के बीच संपर्कों ने व्यापारिक गतिविधियों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

निर्मित कीं। अंग की राजधानी चंपा अपनी भौगोलिक स्थिति और नदी-मार्गों से संपर्क के कारण एक महत्वपूर्ण नगरीय एवं व्यापारिक केंद्र थी, जबकि मगध की राजनीतिक शक्ति और गंगा घाटी में उसकी स्थिति ने उसे क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।²⁶ दोनों जनपदों के बीच व्यापारिक संपर्कों का स्वरूप कृषि उत्पादों, शिल्प-वस्तुओं, दैनिक उपयोग की सामग्री तथा अन्य वस्तुओं के विनिमय से संबंधित रहा होगा, हालांकि इनके बीच व्यापार की विशिष्ट वस्तुओं, मात्रा और नियमितता के संबंध में प्रत्यक्ष प्रमाण सीमित हैं। आंतरिक व्यापार एवं क्षेत्रीय बाजारों की भूमिका को समझने के लिए गाँवों, नगरों और व्यापारिक केंद्रों के बीच विकसित आर्थिक संबंधों पर ध्यान देना आवश्यक है।²⁷ कृषि से प्राप्त अधिशेष ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय केंद्रों तक पहुँच सकता था, जबकि शिल्पकारों द्वारा निर्मित वस्तुएँ स्थानीय उपभोग और व्यापक विनिमय का हिस्सा बन सकती थीं। इस प्रक्रिया में व्यापारी, परिवहनकर्ता, शिल्पकार और अन्य आर्थिक समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। व्यापारिक मार्गों और परिवहन के संदर्भ में गंगा नदी तथा उससे जुड़ी जलधाराएँ वस्तुओं और यात्रियों के आवागमन के लिए उपयोगी थीं। इनके अतिरिक्त स्थल-मार्गों के माध्यम से भी विभिन्न बस्तियों, बाजारों और जनपदों के बीच संपर्क स्थापित होता था। चंपा की स्थिति ने अंग को पूर्वी भारत के अन्य क्षेत्रों से जोड़ने में सहायता की होगी, जबकि मगध के राजगृह और बाद में पाटलिपुत्र जैसे केंद्रों का महत्त्व अलग-अलग ऐतिहासिक चरणों में विकसित हुआ।²⁸ अतः इन नगरों की भूमिका का विश्लेषण करते समय उनके कालक्रम और राजनीतिक स्थिति को ध्यान में रखना आवश्यक है। व्यापारिक संबंधों पर राजनीतिक नियंत्रण का प्रभाव भी उल्लेखनीय था, क्योंकि किसी महत्वपूर्ण नगर, मार्ग या संसाधन-समृद्ध क्षेत्र पर अधिकार स्थापित करने से शासकों को आर्थिक लाभ, राजस्व-संग्रह तथा सामरिक सुविधा प्राप्त हो सकती थी। बिम्बिसार द्वारा अंग पर विजय के बाद चंपा सहित अंग का क्षेत्र मगध के राजनीतिक प्रभाव के अधीन आ गया। इससे मगध की पूर्वी दिशा में स्थिति मजबूत हुई और उसे अंग के आर्थिक संसाधनों तथा व्यापारिक संपर्कों तक पहुँच प्राप्त करने का अवसर मिला।²⁹ फिर भी यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि अंग पर विजय का एकमात्र उद्देश्य व्यापार पर नियंत्रण स्थापित करना था, क्योंकि राजनीतिक प्रभुत्व, क्षेत्रीय विस्तार और सामरिक हित भी इस संघर्ष के संभावित कारण थे। इसी प्रकार, राजनीतिक अधिग्रहण के बाद व्यापार में तत्काल कितनी वृद्धि हुई या व्यापारिक व्यवस्थाओं में क्या परिवर्तन आए, इसका स्पष्ट निर्धारण उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कठिन है। इस प्रकार, अंग एवं मगध के बीच व्यापारिक संबंधों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्राचीन पूर्वी भारत में आर्थिक संपर्क केवल वस्तुओं के विनिमय तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे राजनीतिक शक्ति, नगरीय विकास, परिवहन व्यवस्था और क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया से भी जुड़े हुए थे।³⁰

प्राचीन अंग पर मगध का नियंत्रण पूर्वी भारत में राजनीतिक केंद्रीकरण, राज्य-विस्तार और क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध के शासक बिम्बिसार द्वारा अंग के शासक ब्रह्मदत्त को पराजित किए जाने का उल्लेख बौद्ध साहित्य में मिलता है। इस विजय के परिणामस्वरूप अंग की स्वतंत्र राजनीतिक स्थिति समाप्त हुई और उसका क्षेत्र मगध की सत्ता के अधीन आ गया। इस घटना ने पूर्वी गंगा घाटी में शक्ति-संतुलन को प्रभावित किया तथा मगध के राजनीतिक विस्तार के लिए नई संभावनाएँ उत्पन्न कीं।³¹ राजनीतिक केंद्रीकरण की दृष्टि से अंग का अधिग्रहण महत्वपूर्ण था, क्योंकि इससे मगध के शासकों के प्रभाव का विस्तार एक नए जनपद तक हुआ और राज्य के संसाधनों एवं क्षेत्रीय संपर्कों का दायरा बढ़ा। अंग की राजधानी चंपा का नगरीय एवं

व्यापारिक महत्त्व इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है। चंपा की भौगोलिक स्थिति और नदी-मार्गों से संपर्क ने इसे क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण बनाया था। अंग पर नियंत्रण स्थापित करने से मगध को इस क्षेत्र के संसाधनों और व्यापारिक संपर्कों तक पहुँच प्राप्त करने का अवसर मिला होगा।³² हालांकि, उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्य इस बात का स्पष्ट विवरण नहीं देते कि विजय के तुरंत बाद व्यापारिक मार्गों, राजस्व-संग्रह अथवा प्रशासनिक व्यवस्थाओं में किस प्रकार और कितने व्यापक परिवर्तन हुए। इसलिए इन संभावित परिवर्तनों का विश्लेषण ऐतिहासिक परिस्थितियों के आधार पर सावधानीपूर्वक करना आवश्यक है। प्रशासनिक एवं आर्थिक दृष्टि से किसी नए क्षेत्र को राज्य के अधीन करने के लिए स्थानीय सत्ता-संरचनाओं, राजस्व-संग्रह और राजनीतिक निष्ठाओं के पुनर्गठन की आवश्यकता हो सकती थी, लेकिन अंग में इन प्रक्रियाओं का वास्तविक स्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाणों के अभाव में निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता।³³ इसके बावजूद, अंग के अधिग्रहण ने मगध की क्षेत्रीय शक्ति को बढ़ाने और पूर्वी भारत के विभिन्न भागों के साथ उसके संपर्कों को विस्तृत करने में योगदान दिया। गंगा नदी तथा उससे संबंधित जलमार्गों और स्थल-मार्गों ने विभिन्न बस्तियों, नगरों और आर्थिक केंद्रों के बीच संपर्क स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजनीतिक एकीकरण के साथ इन संपर्कों के विस्तार की संभावनाएँ बढ़ीं, जिससे वस्तुओं, व्यापारियों और लोगों की आवाजाही को प्रोत्साहन मिल सकता था।³⁴ फिर भी राजनीतिक एकीकरण और आर्थिक एकीकरण को एक ही प्रक्रिया नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि किसी क्षेत्र पर सत्ता स्थापित हो जाने मात्र से वहाँ व्यापारिक गतिविधियों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं और सामाजिक संबंधों में तत्काल एकरूपता आना आवश्यक नहीं था। अंग की विजय को मगध के व्यापक उत्कर्ष की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन मगध का साम्राज्यगत विस्तार अनेक शासकों, राजनीतिक परिस्थितियों और आर्थिक प्रक्रियाओं के संयुक्त प्रभाव से विकसित हुआ। इस प्रकार, अंग पर मगध के नियंत्रण का अध्ययन प्राचीन पूर्वी भारत में राज्य-विस्तार, संसाधनों पर अधिकार, व्यापारिक संपर्कों और क्षेत्रीय एकीकरण के बीच संबंधों को समझने में सहायक है।³⁵

प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और व्यापारिक गतिविधियों का संबंध पूर्वी भारत में राज्य-विस्तार तथा आर्थिक संपर्कों की प्रक्रिया को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में महाजनपदों के उदय के साथ राजनीतिक शक्ति का विस्तार, कृषि संसाधनों पर नियंत्रण, नगरीय केंद्रों का विकास और व्यापारिक मार्गों की उपयोगिता बढ़ने लगी थी। इस संदर्भ में राजनीतिक सत्ता और आर्थिक संसाधन एक-दूसरे से जुड़े हुए थे, क्योंकि कृषि उत्पादन, शिल्प गतिविधियों तथा व्यापार से प्राप्त संसाधन राज्य की राजस्व-क्षमता और सैन्य संगठन को मजबूत करने में सहायक हो सकते थे।³⁶ दूसरी ओर, राजनीतिक सत्ता के विस्तार से नए क्षेत्रों, संसाधनों और व्यापारिक संपर्कों तक पहुँच प्राप्त करने की संभावनाएँ बढ़ती थीं। अंग की राजधानी चंपा इस संदर्भ में विशेष महत्त्व रखती थी। बौद्ध साहित्य में चंपा का उल्लेख मिलता है, जिससे तत्कालीन पूर्वी भारत में उसकी नगरीय पहचान का पता चलता है। गंगा नदी-प्रणाली से संपर्क ने चंपा को व्यापारिक गतिविधियों और क्षेत्रीय आवागमन के लिए अनुकूल भौगोलिक स्थिति प्रदान की होगी।³⁷ ऐसे व्यापारिक केंद्रों का महत्त्व केवल आर्थिक नहीं था, बल्कि उनकी स्थिति परिवहन, क्षेत्रीय संपर्क और राजनीतिक प्रभाव की दृष्टि से भी उपयोगी हो सकती थी। मगध के शासक बिम्बिसार द्वारा अंग पर विजय इस राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का प्रमुख उदाहरण है। इस विजय से मगध का क्षेत्रीय विस्तार हुआ और अंग के संसाधनों तथा चंपा जैसे महत्वपूर्ण

नगरीय केंद्र तक उसकी राजनीतिक पहुँच स्थापित हुई। इससे मगध को पूर्वी दिशा में अपने प्रभाव का विस्तार करने का अवसर मिला, यद्यपि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि अंग पर आक्रमण का मुख्य उद्देश्य व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण प्राप्त करना ही था। राजनीतिक विस्तार के पीछे सामरिक आवश्यकताएँ, क्षेत्रीय प्रभुत्व और पड़ोसी शक्तियों को नियंत्रित करने की आकांक्षा भी महत्वपूर्ण रही होंगी। राज्य-निर्माण की प्रक्रिया में व्यापारिक संपर्कों की भूमिका को समझते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आर्थिक गतिविधियाँ केवल राजकीय नीतियों से संचालित नहीं होती थीं; स्थानीय उत्पादक, व्यापारी, शिल्पकार और उपभोक्ता भी इनके विकास में योगदान करते थे। नदी-मार्गों और स्थल-मार्गों के माध्यम से वस्तुओं एवं लोगों का आवागमन विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ता था और क्षेत्रीय बाजारों के विकास की संभावनाएँ उत्पन्न करता था।³⁸ अंग के मगध में राजनीतिक अधिग्रहण से दोनों क्षेत्रों के बीच सत्ता-संबंधों में परिवर्तन आया, लेकिन इससे तत्काल पूर्ण आर्थिक एकीकरण स्थापित हो गया हो, ऐसा मानने के लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। राजनीतिक अधीनता का अर्थ किसी क्षेत्र पर दूसरे राज्य की सर्वोच्च सत्ता स्वीकार किया जाना था, जबकि आर्थिक एकीकरण में व्यापारिक संपर्कों की निरंतरता, बाजारों का परस्पर जुड़ाव, वस्तुओं का नियमित विनिमय तथा आर्थिक गतिविधियों के बीच व्यापक संबंध शामिल होते हैं। इसलिए अंग की विजय को राजनीतिक एकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में देखा जा सकता है, जबकि उसके आर्थिक प्रभावों का आकलन उपलब्ध साहित्यिक, पुरातात्विक और मुद्राशास्त्रीय साक्ष्यों के आधार पर अलग से किया जाना चाहिए। इस प्रकार, अंग एवं मगध के संबंधों का अध्ययन स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारत में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और व्यापारिक गतिविधियाँ परस्पर संबंधित थीं, किंतु उनका विकास एक समान गति से होना आवश्यक नहीं था। इन दोनों के बीच संबंधों का विश्लेषण पूर्वी भारत में राज्य-निर्माण, आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण, नगरीय विकास और क्षेत्रीय एकीकरण की ऐतिहासिक प्रक्रिया को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करता है।³⁹

प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक संपर्कों और क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया का प्रभाव केवल राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं था, बल्कि इससे नगरीय जीवन, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक गतिविधियों के विकास को भी समझने में सहायता मिलती है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास गंगा घाटी में कृषि उत्पादन के विस्तार, व्यापारिक गतिविधियों की वृद्धि और नगरीय केंद्रों के विकास ने समाज की संरचना को प्रभावित किया।⁴⁰ अंग की राजधानी चंपा और मगध का राजगृह तत्कालीन पूर्वी भारत के महत्वपूर्ण नगरीय केंद्रों में शामिल थे। इन नगरों में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के विस्तार से कृषकों, व्यापारियों, शिल्पकारों, परिवहन से जुड़े लोगों तथा अन्य सामाजिक समूहों के बीच परस्पर संपर्क बढ़ने की संभावनाएँ बनीं। व्यापारियों की भूमिका वस्तुओं के विनिमय और विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण थी, जबकि शिल्पकार दैनिक उपयोग की वस्तुओं तथा अन्य उत्पादों के निर्माण के माध्यम से नगरीय अर्थव्यवस्था में योगदान देते थे। इस प्रकार के आर्थिक संपर्कों से विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच सहयोग, प्रतिस्पर्धा और परस्पर निर्भरता के नए रूप विकसित हो सकते थे। हालांकि, अंग और मगध में इन समूहों की संख्या, संगठन तथा सामाजिक स्थिति के संबंध में उपलब्ध प्रमाणों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण आवश्यक है।⁴¹ धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह काल महत्वपूर्ण था। बौद्ध और जैन परंपराओं के प्रारंभिक विकास तथा उनके प्रसार में मगध और उसके आसपास के क्षेत्रों की उल्लेखनीय भूमिका रही। बौद्ध साहित्य में चंपा, राजगृह और अन्य नगरीय केंद्रों का

उल्लेख मिलता है, जिससे इन क्षेत्रों के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है। व्यापारी, गृहस्थ, शासक और अन्य सामाजिक समूह धार्मिक समुदायों के संपर्क में आते थे तथा दान, उपदेश-श्रवण और धार्मिक गतिविधियों में भाग लेते थे। ऐसे संपर्कों ने धार्मिक विचारों के प्रसार और विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संवाद के अवसर उपलब्ध कराए। जैन परंपरा में भी मगध तथा पूर्वी भारत के अन्य क्षेत्रों का महत्वपूर्ण स्थान रहा।⁴² हालांकि, किसी विशिष्ट धार्मिक विचार या परंपरा के प्रसार को केवल व्यापारिक गतिविधियों का परिणाम मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि इसमें धार्मिक शिक्षकों की यात्राओं, स्थानीय संरक्षण, सामाजिक परिस्थितियों और राजनीतिक संबंधों की भी भूमिका रही। अंग पर मगध के राजनीतिक नियंत्रण से दोनों क्षेत्रों के बीच प्रशासनिक और सामाजिक संपर्कों के विस्तार की संभावनाएँ बढ़ीं, लेकिन इससे सांस्कृतिक एकरूपता तत्काल स्थापित हो गई हो, ऐसा निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। स्थानीय परंपराएँ, सामाजिक व्यवहार और धार्मिक मान्यताएँ अपनी विशिष्टताओं के साथ बनी रह सकती थीं। इस प्रकार, अंग एवं मगध के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन यह समझने में सहायक है कि नगरीकरण, व्यापार, धार्मिक गतिविधियों और राजनीतिक परिवर्तन ने प्राचीन पूर्वी भारत के समाज को किस प्रकार प्रभावित किया।⁴³

प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक संबंधों और क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण करते समय उपलब्ध स्रोतों की प्रकृति, विश्वसनीयता और सीमाओं का आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक है। इस विषय से संबंधित प्रमुख साहित्यिक स्रोतों में बौद्ध ग्रंथ, विशेषकर दीघ निकाय, अंगुत्तर निकाय तथा अन्य प्राचीन धार्मिक साहित्य शामिल हैं। इन ग्रंथों में अंग, मगध, चंपा और तत्कालीन महाजनपदों से संबंधित अनेक उल्लेख मिलते हैं, जिनसे उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों, नगरीय जीवन और सामाजिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है। हालांकि, इन ग्रंथों की रचना, संकलन और मौखिक परंपरा से लिखित रूप में आने की प्रक्रिया विभिन्न चरणों में संपन्न हुई थी। इसलिए उनमें वर्णित घटनाओं को समकालीन अभिलेखों के समान प्रत्यक्ष एवं निर्विवाद प्रमाण नहीं माना जा सकता।⁴⁴ उदाहरण के लिए, बिम्बिसार द्वारा अंग के शासक ब्रह्मदत्त को पराजित करने का विवरण मगध के विस्तार को समझने में महत्वपूर्ण है, लेकिन इस घटना की सटीक तिथि, सैन्य अभियान के विस्तृत स्वरूप तथा विजय के तत्कालीन प्रशासनिक परिणामों के संबंध में जानकारी सीमित है। इसी प्रकार, साहित्यिक स्रोतों में किसी नगर के समृद्ध या महत्वपूर्ण होने का उल्लेख उसके व्यापार की वास्तविक मात्रा, व्यापारिक वस्तुओं की विविधता अथवा आर्थिक गतिविधियों के विस्तार को अपने आप प्रमाणित नहीं करता। इन प्रश्नों के अध्ययन में पुरातात्विक साक्ष्य, प्राचीन मुद्राएँ, बस्तियों के अवशेष, मृदाभांड और अन्य भौतिक सामग्री उपयोगी भूमिका निभाते हैं।⁴⁵ उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर किसी क्षेत्र में बस्ती के विकास, उत्पादन गतिविधियों, भौतिक संस्कृति और संपर्कों के कुछ पक्षों का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। फिर भी पुरातात्विक साक्ष्यों की अपनी सीमाएँ हैं। किसी स्थान से प्राप्त वस्तु की उपस्थिति मात्र से उसके व्यापारिक विनिमय, उत्पादन-स्थल या परिवहन मार्ग का निश्चित निर्धारण नहीं किया जा सकता; इसके लिए वस्तु के संदर्भ, काल-निर्धारण और अन्य साक्ष्यों से तुलना आवश्यक है। इसी प्रकार, मुद्राओं की प्राप्ति आर्थिक लेन-देन के अध्ययन में सहायक होती है, लेकिन उनसे मुद्रा के व्यापक प्रचलन या व्यापार की कुल मात्रा का सीधा निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। अंग पर मगध की विजय के आर्थिक परिणामों का आकलन भी एक जटिल ऐतिहासिक समस्या है। राजनीतिक अधिग्रहण से किसी क्षेत्र के संसाधनों,

व्यापारिक केंद्रों और मार्गों पर नियंत्रण की संभावनाएँ बढ़ सकती थीं, लेकिन इससे व्यापार में तत्काल वृद्धि, राजस्व-व्यवस्था में परिवर्तन या बाजारों के पूर्ण एकीकरण की पुष्टि स्वतः नहीं होती। इन परिवर्तनों को प्रमाणित करने के लिए साहित्यिक विवरणों, पुरातात्विक साक्ष्यों, मुद्राशास्त्रीय सामग्री और भौगोलिक परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। साथ ही, प्राचीन नदी-मार्गों और बस्तियों की पहचान करते समय वर्तमान भौगोलिक स्थिति को सीधे प्राचीन परिस्थितियों के समान नहीं मानना चाहिए, क्योंकि नदियों के प्रवाह, बस्तियों के विस्तार और परिवहन के स्वरूप में समय के साथ परिवर्तन संभव है। अतः अंग एवं मगध के संबंधों का ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन करते समय प्रमाणित तथ्यों, संभावित व्याख्याओं और अभी अनिश्चित प्रश्नों के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखना आवश्यक है। इस प्रकार, विभिन्न स्रोतों के आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण से राजनीतिक विजय, व्यापारिक गतिविधियों और क्षेत्रीय एकीकरण के संबंधों की अधिक संतुलित समझ विकसित की जा सकती है, जबकि जहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ निश्चित निष्कर्ष देने के स्थान पर ऐतिहासिक संभावनाओं और उनकी सीमाओं को स्पष्ट करना अधिक उपयुक्त होगा।⁴⁶

प्राचीन अंग एवं मगध के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापार तथा क्षेत्रीय एकीकरण का अध्ययन पूर्वी भारत में राज्य-निर्माण और आर्थिक विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में अंग और मगध दोनों प्रमुख महाजनपद थे, जिनकी राजनीतिक स्थिति, भौगोलिक परिस्थितियों और आर्थिक गतिविधियों ने उनके पारस्परिक संबंधों को प्रभावित किया। अंग की राजधानी चंपा का नगरीय एवं व्यापारिक महत्त्व तथा मगध की कृषि-संपन्नता, सामरिक स्थिति और राजनीतिक विस्तार की क्षमता इस प्रतिस्पर्धा के महत्वपूर्ण पक्ष थे। बौद्ध साहित्य में वर्णित बिम्बिसार की अंग-विजय ने दोनों जनपदों के बीच शक्ति-संतुलन को बदल दिया और मगध के क्षेत्रीय विस्तार को गति प्रदान की। इस विजय से मगध को अंग के क्षेत्र और उसके व्यापारिक संपर्कों तक पहुँच प्राप्त करने का अवसर मिला, यद्यपि इसके आर्थिक एवं प्रशासनिक परिणामों की वास्तविक सीमा निर्धारित करने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण सीमित हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक प्रभुत्व, आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण, व्यापारिक मार्गों की उपयोगिता और नगरीय केंद्रों का विकास परस्पर संबंधित प्रक्रियाएँ थीं, लेकिन राजनीतिक अधीनता को पूर्ण आर्थिक एवं सांस्कृतिक एकीकरण के समान नहीं माना जा सकता। अंग का मगध में समावेश पूर्वी भारत में राजनीतिक केंद्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण था, जबकि व्यापक क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया आगे भी विभिन्न शासकों और ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रभाव में विकसित होती रही। अतः साहित्यिक, पुरातात्विक, मुद्राशास्त्रीय एवं भौगोलिक साक्ष्यों के आलोचनात्मक विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि अंग एवं मगध के संबंध प्राचीन भारत में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक संपर्कों और क्षेत्रीय एकीकरण के जटिल अंतर्संबंधों को उजागर करते हैं तथा पूर्वी भारत के ऐतिहासिक विकास में अंग की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हैं।

संदर्भ

1. झा, डी. एन., प्राचीन भारत एक प्रारंभिक रूपरेखा, पीपल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2001, पृ. 112.
2. शर्मा, राम शरण, प्राचीन भारत के आर्थिक और सामाजिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 85.
3. झा, मदन मोहन, प्राचीन भारतीय महाजनपद और राज्य व्यवस्था, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1995, पृ. 44.
4. वही, पृ. 132-133.

5. त्रिपाठी, रामशंकर, प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2008, पृ. 167.
6. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, प्राचीन भारतीय लिपिमाला, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, 1983, पृ. 56.
7. उपाध्याय, वासुदेव, प्राचीन भारतीय अभिलेख, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1971, पृ. 90.
8. पांडे, राजबली, प्राचीन भारत में नगर और नगरीकरण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1998, पृ. 120.
9. मिश्र, जयप्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2005, पृ. 145.
10. लाल, बी. बी., भारत की पुरातात्विक विरासत, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2009, पृ. 210-212.
11. सांकलिया, एच. डी., प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988, पृ. 78.
12. चेटर्जी, एस. के., भारत का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भूगोल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992, पृ. 115.
13. जायसवाल, के. पी., हिंदू राजतंत्र, द इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, 1924, पृ. 230-232.
14. मजूमदार, आर. सी., प्राचीन भारत, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2001, पृ. 184.
15. रायचौधरी, हेमचंद्र, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1996, पृ. 142.
16. कौशाम्बी, डी. डी., प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृ. 95.
17. त्रिपाठी, रामशंकर, पूर्वोक्त, पृ. 67-68.
18. सिंह, उपेंद्र, प्राचीन और पूर्व-मध्यकालीन भारत का इतिहास, पियरसन एजुकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 254.
19. वाजपेयी, कृष्णदत्त, प्राचीन भारतीय नगर, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1990, पृ. 134.
20. गुप्त, परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारतीय सिक्के, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली, 1973, पृ. 112-113.
21. ठाकुर, विजय कुमार, प्राचीन भारत में नगरीकरण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1981, पृ. 160.
22. सांकलिया, एच. डी., पूर्वोक्त, पृ. 45.
23. जैन, जगदिश चंद्र, जीवन और संस्कृति जैन आगमों में, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1985, पृ. 205.
24. पाठक, विश्वनाथ प्रसाद, प्राचीन भारत में राज्य का विकास, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1989, पृ. 118.
25. अग्निहोत्री, प्रभुदयाल, पतंजलि कालीन भारत, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1963, पृ. 182-183.
26. चटर्जी, सुकुमार, भारत की नदियाँ और ऐतिहासिक भूगोल, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 1994, पृ. 88.
27. सहाय, सच्चिदानंद, प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2003, पृ. 141.
28. वही, पृ. 195-196.
29. शर्मा, दशरथ, प्रारंभिक भारतीय इतिहास के स्रोत, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1975, पृ. 62.
30. सिंह, जयकिशोर, प्राचीन मगध का इतिहास, कला प्रकाशन, वाराणसी, 1991, पृ. 110.
31. लाल, हीरा, प्राचीन बिहार के जनपद, बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1980, पृ. 74.
32. वर्मा, बी. एस., अंग जनपद और चंपा का पुरातात्विक महत्त्व, ऐतिहासिक अध्ययन पत्रिका, खंड 12, 1986, पृ. 51.
33. दास, दीप नारायण, प्राचीन भारत में व्यापार और वाणिज्य, मैकमिलन कंपनी, नई दिल्ली, 1998, पृ. 165.

34. राय, गजानन, महाजनपद काल और मगध का उत्कर्ष, साहित्य सदन, पटना, 2006, पृ. 123.
35. झा, योगेन्द्र, प्राचीन बिहार की राजनीतिक संरचना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2012, पृ. 138–140.
36. शर्मा, राम शरण, पूर्वोक्त, पृ. 89.
37. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, प्राचीन भारतीय साहित्य में संस्कृति, विचार प्रवाह, नई दिल्ली, 1982, पृ. 102.
38. सिंह, राजेंद्र प्रसाद, बुद्धकालीन भारत, ज्ञान भारती प्रकाशन, पटना, 2005, पृ. 140.
39. वही, पृ. 215–217.
40. रॉय, शौरिन्द्र नाथ, भारत का पुरातात्विक सर्वेक्षण, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1970, पृ. 150.
41. कुमार, विजय, अंग क्षेत्र का इतिहास एवं संस्कृति, भागलपुर विश्वविद्यालय प्रकाशन, भागलपुर, 2004, पृ. 66.
42. श्रीवास्तव, के. एल., प्राचीन भारतीय इतिहास की रूपरेखा, अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा, 2001, पृ. 175–177.
43. चौबे, बालगोविन्द, बौद्ध साहित्य और प्राचीन भूगोल, बिहार प्राकृत जैन शोध संस्थान, वैशाली, 1993, पृ. 112–113.
44. सिंह, रामबचन, पूर्वी गंगा घाटी का प्राचीन इतिहास, काशी विद्यापीठ, वाराणसी, 2000, पृ. 145–146.
45. पांडे, चंद्रबली, प्राचीन भारत के राजवंश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997, पृ. 190.
46. पाठक, विश्वनाथ प्रसाद, पूर्वोक्त, पृ. 202–203.